Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
(A National Multidisciplinary bi-lingual Quarterly Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: (Cosmos: 7.866 & I2OR: 5.675) Volume 16, No. 03, July-September, 2026, pp. 277-286

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में युवा दायित्वः डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन

तनुजा कुमारी*

शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार।

*Corresponding Author: tanujadipak.2016@gmail.com

***Citation**: कुमारी, तनुजा (2026). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में युवा दायित्वः डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 16(03), 277–286.*

ABSTRACT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इसका उद्देश्य शिक्षा को समग्र, समावेशी, मूल्यपरक, कौशल–आधारित, बहुविषयक तथा भारतीय ज्ञान–परंपरा से संबद्ध बनाना है। नीति विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता के विकास पर बल देती है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय (2023–24) के अनुसार देश में 14,71,891 विद्यालय, 24.80 करोड़ विद्यार्थी और 98.08 लाख शिक्षक थे। इनमें 10,17,660 सरकारी विद्यालय शामिल थे। ये आँकड़े गुणवत्तापूर्ण, मूल्यपरक और उत्तरदायी शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में युवा दायित्व की अवधारणा का विश्लेषण करना तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को समझना है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधिकारिक दस्तावेजों तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह की प्रमुख साहित्यिक एवं वैचारिक कृतियों का अध्ययन किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50 प्रति ात करने तथा बहुविषयक एवं समग्र शिक्षा को बढ़ावा देने का लक्ष्य निर्धारित करती है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के विचारों में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि चरित्र–निर्माण, नैतिकता, सामाजिक चेतना और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध विकसित करने का साधन है। उनके विचारों में भारतीय संस्कृति, सामाजिक समरसता, सेवा–भाव, अनुशासन, राष्ट्रीय एकता और जिम्मेदार नागरिकता को महत्व दिया गया है। ये मूल्य वर्तमान युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व निर्माण और सामाजिक सहभागिता के संदर्भ में प्रासंगिक हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को जीवन–मूल्यों, कौशल, जिम्मेदार नागरिकता, भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति तथा समग्र व्यक्तित्व विकास से जोड़ती है। अतः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों का समकालीन पुनर्पाठ युवाओं में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रबोध और जिम्मेदार नागरिकता के विकास को समझने में उपयोगी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक शैक्षिक लक्ष्यों के संदर्भ में इन विचारों का समन्वय भारतीय शिक्षा में मूल्यपरकता, सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीय चेतना को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

***शब्दकोशः** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, युवा दायित्व, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, मूल्यपरक शिक्षा, राष्ट्रीय चेतना।*

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पुनर्गठन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इसका उद्देश्य शिक्षा को केवल परीक्षा और रोजगार तक सीमित न रखकर ज्ञान, कौशल, नैतिकता, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा राष्ट्रीय चेतना से जोड़ना है। नीति में शिक्षा को समग्र, समावेशी, बहुविषयक, मूल्यपरक और भारतीय ज्ञान–परंपरा से संबद्ध बनाने पर विशेष बल दिया गया है। इस दृष्टि से युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि युवा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और लोकतांत्रिक शक्ति के प्रमुख आधार होते हैं। अतः शिक्षा के माध्यम से उनमें जिम्मेदार नागरिकता, सामाजिक संवेदनशीलता, अनुशासन, नेतृत्व, सह–अस्तित्व और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध विकसित करना समकालीन भारत की प्रमुख आवश्यकता है।

भारत की विशाल युवा आबादी इस आवश्यकता को और अधिक महत्त्वपूर्ण बनाती है। भारत सरकार के नवीनतम उपलब्ध आधिकारिक आँकड़ों के अनुसार, भारत में 2023–24 में कुल 14,71,891 विद्यालय, लगभग 24-80 करोड़ विद्यार्थी और 98-08 लाख शिक्षक थे। इनमें लगभग 10-18 लाख सरकारी विद्यालय शामिल थे। इतनी व्यापक शिक्षा व्यवस्था यह स्पष्ट करती है कि विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान केवल ज्ञान प्रदान करने के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व, मूल्यों और सामाजिक दृष्टिकोण के निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने सकल नामांकन अनुपात को वर्ष 2035 तक 50 प्रतिशत तक पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह लक्ष्य उच्च शिक्षा के विस्तार के साथ–साथ युवाओं को अधिक सक्षम, जिम्मेदार और राष्ट्र–उन्मुख बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 5+3+3+4 की नई शैक्षिक संरचना, बहुविषयक अध्ययन, व्यावसायिक शिक्षा, भारतीय भाषाओं का प्रोत्साहन, अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास और मूल्य–आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। नीति का व्यापक उद्देश्य ऐसे शिक्षार्थियों का निर्माण करना है जो न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सफल हों, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझें। इस संदर्भ में युवा दायित्व की अवधारणा केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, लोकतांत्रिक सहभागिता, सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, लैंगिक समानता, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता जैसे व्यापक आयाम सम्मिलित हैं।

इसी संदर्भ में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचार विशेष रूप से प्रासंगिक दिखाई देते हैं। उनके विचारों में शिक्षा को केवल सूचना अथवा ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम न मानकर व्यक्तित्व–निर्माण, नैतिक चेतना, सामाजिक जागरूकता और उत्तरदायित्व–बोध विकसित करने का साधन माना गया है। उनके साहित्यिक चिंतन में भारतीय संस्कृति, सामाजिक समरसता, मानवीय संवेदना, अनुशासन, सेवा–भाव, राष्ट्रीय एकता और जिम्मेदार नागरिकता जैसे तत्वों की महत्ता दिखाई देती है। ये विचार वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि आज के युवा तीव्र तकनीकी परिवर्तन, वैश्वीकरण, डिजिटल संचार, रोजगार की प्रतिस्पर्धा और सामाजिक परिवर्तन के बीच अपनी भूमिका निर्धारित कर रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को भारतीय भाषाओं, संस्कृति, जीवन–मूल्यों और राष्ट्रीय विकास से जोड़ते हुए विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व–विकास की अवधारणा को आगे बढ़ाती है। इस प्रकार डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के बीच अनेक वैचारिक समानताएँ दिखाई देती हैं। दोनों ही संदर्भों में शिक्षा को व्यक्ति और समाज के बीच सार्थक संबंध स्थापित करने वाला माध्यम माना जा सकता है। इसलिए वर्तमान अध्ययन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में युवा दायित्व की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों की समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि उनके

विचार आज की युवा पीढ़ी में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रबोध और जिम्मेदार नागरिकता के विकास के लिए किस प्रकार उपयोगी हो सकते हैं।

उद्देश्य

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में युवा दायित्व की अवधारणा का अध्ययन करना।
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करना।
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।
- युवा पीढ़ी में नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रीय भावना के विकास में इन विचारों की भूमिका को समझना।

शोध–पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध–पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन का मुख्य आधार द्वितीयक स्रोत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के आधिकारिक दस्तावेजों, रिपोर्टों एवं उपलब्ध शैक्षिक आँकड़ों का अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह की प्रमुख साहित्यिक, शैक्षिक एवं वैचारिक कृतियों का विषयवस्तु के आधार पर विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में युवा दायित्व, मूल्यपरक शिक्षा, नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय भावना तथा जिम्मेदार नागरिकता जैसे प्रमुख आयामों को विश्लेषण की इकाई बनाया गया है। प्राप्त सामग्री का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विश्लेषण करते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों के बीच वैचारिक साम्य तथा उनकी समकालीन प्रासंगिकता को स्पष्ट किया गया है।

युवा दायित्व की अवधारणा और भारतीय संदर्भ

भारत में युवा केवल जनसंख्या का एक आयु–वर्ग नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक प्रगति और लोकतांत्रिक विकास की प्रमुख शक्ति हैं। इसलिए युवा दायित्व की अवधारणा को केवल रोजगार प्राप्त करने अथवा व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसके अंतर्गत युवाओं में सामाजिक संवेदनशीलता, नैतिक चेतना, अनुशासन, नेतृत्व, लोकतांत्रिक सहभागिता, राष्ट्रबोध तथा समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व का विकास भी आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी व्यापक दृष्टिकोण को शिक्षा के माध्यम से विकसित करने का प्रयास करती है। नीति शिक्षा को ज्ञान और कौशल के साथ–साथ चरित्र निर्माण तथा जिम्मेदार नागरिकता से जोड़ती है।

भारत की विशाल शिक्षा व्यवस्था इस दायित्व को और महत्त्वपूर्ण बनाती है। 2023–24 में देश में 14,71,891 विद्यालय, लगभग 24.80 करोड़ विद्यार्थी और 98.08 लाख शिक्षक थे। इतनी व्यापक व्यवस्था में शिक्षा संस्थानों की भूमिका केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं रह सकती। विद्यालय और उच्च शिक्षा संस्थान युवाओं के विचारों, व्यवहार, सामाजिक दृष्टिकोण और नागरिक चेतना को प्रभावित करने वाले प्रमुख संस्थान हैं। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के परिणामों को केवल परीक्षा–प्रदर्शन से नहीं, बल्कि विद्यार्थी के समग्र विकास से जोड़ना युवा दायित्व की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में युवा दायित्व के प्रमुख आयाम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 युवा दायित्व को प्रत्यक्ष रूप से एक अलग विषय के रूप में सीमित नहीं करती, बल्कि इसे शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों और प्रक्रियाओं में अंतर्निहित करती है। नीति में 5334 शैक्षिक संरचना, अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन और मूल्य–आधारित शिक्षा पर बल दिया गया है। इन प्रावधानों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि नीति ऐसे युवाओं के निर्माण की अपेक्षा करती है जो ज्ञान के साथ उसका सामाजिक उपयोग भी समझ सकें।

बहुविषयक शिक्षा युवा को विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय प्रश्नों को एक–दूसरे से जोड़कर देखने की क्षमता प्रदान करती है। इसी प्रकार अनुभवात्मक एवं गतिविधि–आधारित अधिगम युवाओं को केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने के बजाय वास्तविक जीवन की समस्याओं से जोड़ता है। इससे सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, सामुदायिक सहभागिता और समस्या–समाधान की भावना विकसित हो सकती है।

भारतीय भाषाओं, कला, संस्कृति और भारतीय ज्ञान–परंपरा पर दिया गया जोर भी युवा दायित्व के सांस्कृतिक आयाम को मजबूत करता है। इसका अर्थ अतीत की केवल पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक ज्ञान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ जोड़ना है। इसी प्रकार लैंगिक समानता, समावेशन और सामाजिक न्याय पर बल युवाओं को विविधता का सम्मान करने तथा समान अवसरों की सामाजिक आवश्यकता को समझने में सक्षम बनाता है।

राष्ट्रीय विकास और जिम्मेदार नागरिकता के निर्माण में युवा दायित्व

युवा दायित्व का सबसे व्यापक पक्ष जिम्मेदार नागरिकता है। लोकतांत्रिक भारत में नागरिकता केवल अधिकारों के प्रयोग तक सीमित नहीं हैय इसमें कर्तव्यों का निर्वहन, सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता और राष्ट्र के विकास में सक्रिय सहभागिता भी शामिल है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल्यपरक एवं समग्र शिक्षा की अवधारणा इसी संतुलन को मजबूत करने की क्षमता रखती है।

आज भारतीय युवा डिजिटल तकनीक, वैश्वीकरण, सामाजिक मीडिया और तेजी से बदलते रोजगार बाजार से प्रभावित हैं। इससे नए अवसरों के साथ गलत सूचना, सामाजिक ध्रुवीकरण, उपभोक्तावाद और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा का दायित्व केवल डिजिटल कौशल प्रदान करना नहीं, बल्कि युवाओं में विवेकपूर्ण निर्णय, आलोचनात्मक चिंतन और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करना भी है। यही कारण है कि युवा दायित्व को आधुनिक भारत में नैतिक एवं नागरिक शिक्षा से जोड़ना आवश्यक है।

उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50 प्रतिशत करने का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य भी युवा दायित्व के विस्तार की संभावनाएँ बढ़ाता है। अधिक युवाओं को उच्च शिक्षा से जोड़ने का वास्तविक लाभ तभी प्राप्त होगा जब शिक्षा उन्हें रोजगार योग्य बनाने के साथ सामाजिक रूप से उत्तरदायी भी बनाए। इस दृष्टि से युवा दायित्व व्यक्तिगत उपलब्धि और राष्ट्रीय विकास के बीच सेतु का कार्य करता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में युवा दायित्व को ''ज्ञान, कौशल, नैतिकता, सामाजिक सहभागिता और राष्ट्रीय चेतना के समन्वित विकास'' के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

साहित्यिक चिंतन में सामाजिक सरोकार और जनपक्षधरता

डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक विचारों का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनके चिंतन का प्रमुख आधार साहित्य को समाज से जोड़ना है। उनकी आलोचनात्मक दृष्टि में साहित्य केवल सौंदर्य–बोध या मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ को समझने और उपेक्षित सामाजिक समूहों की आवाज को सामने लाने का माध्यम है। उनके साहित्यिक चिंतन में किसान, शिल्पी और श्रमजीवी वर्गों के सामाजिक अनुभवों तथा उनकी पीड़ा और संघर्ष को महत्त्व दिया गया है। उपलब्ध साहित्यिक विवेचन में भी उनके योगदान को हिंदी साहित्य को अधिक लोकतांत्रिक बनाने तथा वंचित सामाजिक समूहों के अनुभवों को साहित्यिक विमर्श में प्रतिष्ठित करने से जोड़ा गया है।

इस दृष्टि से उनके साहित्यिक विचार युवा दायित्व की अवधारणा से सीधे जुड़े दिखाई देते हैं। भारत जैसे सामाजिक विविधता वाले देश में युवा यदि साहित्य के माध्यम से समाज की असमानताओं, श्रम, संघर्ष और मानवीय संवेदनाओं को समझते हैं, तो उनमें केवल व्यक्तिगत सफलता की आकांक्षा नहीं, बल्कि सामाजिक

उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित हो सकती है। वर्तमान भारत में 2023–24 के दौरान 14,71,891 विद्यालयों में लगभग 24.80 करोड़ विद्यार्थी अध्ययनरत थे और 98.08 लाख शिक्षक शिक्षा व्यवस्था से जुड़े थे। इतनी व्यापक शिक्षा व्यवस्था में साहित्य और सामाजिक चिंतन को केवल विषयगत अध्ययन न मानकर सामाजिक चेतना के साधन के रूप में देखना अधिक उपयोगी है। इस प्रकार डॉ. सिंह की जनपक्षधर दृष्टि शिक्षा के उस उद्देश्य को मजबूत करती है जिसमें विद्यार्थी समाज की वास्तविक समस्याओं के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी बनता है।

शिक्षा, आलोचनात्मक चेतना और व्यक्तित्व–विकास

डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं वैचारिक चिंतन का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष शिक्षा को व्यापक सामाजिक चेतना से जोड़कर देखना है। उनके विचारों का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं किया जाना चाहिए कि वे शिक्षा के बारे में क्या कहते हैं, बल्कि इस आधार पर भी किया जाना चाहिए कि उनकी साहित्यिक दृष्टि विद्यार्थी और युवा को किस प्रकार सामाजिक प्रश्नों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। साहित्य के माध्यम से सामाजिक अनुभवों को समझना आलोचनात्मक चिंतन, संवेदनशीलता और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के विकास में सहायक हो सकता है।

यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ भी महत्त्वपूर्ण साम्य प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को रटने की प्रक्रिया से हटाकर समझ, आलोचनात्मक चिंतन, चर्चा, विश्लेषण, समस्या–समाधान और अनुभवात्मक अधिगम की ओर ले जाने पर बल देती है। नीति का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व का विकास भी है।

डॉ. सिंह की साहित्यिक दृष्टि को इस संदर्भ में पढ़ने पर साहित्य युवा के लिए सामाजिक प्रश्नों पर विचार करने की प्रयोगशाला बन सकता है। जातीय–सामाजिक असमानता, श्रम, वर्गीय अनुभव, सांस्कृतिक पहचान और लोकतांत्रिक सहभागिता जैसे प्रश्नों को साहित्यिक अध्ययन से जोड़ने पर विद्यार्थी अपने आसपास के समाज को अधिक आलोचनात्मक ढंग से समझ सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों, लैंगिक संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्यों, नागरिकता–कौशल और भारत के ज्ञान से परिचित कराने को आवश्यक क्षमताओं में शामिल करती है। इस प्रकार डॉ. सिंह का चिंतन शिक्षा के ज्ञानात्मक पक्ष को सामाजिक एवं नैतिक चेतना से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत करता है।

समकालीन भारत में डॉ. सिंह के विचारों की शैक्षिक प्रासंगिकता

समकालीन भारत में डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों की प्रासंगिकता का सबसे महत्त्वपूर्ण आधार सामाजिक समावेशन और जिम्मेदार नागरिकता है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार–योग्यता विकसित करना नहीं हो सकता। डिजिटल परिवर्तन, वैश्वीकरण, सामाजिक असमानता और बदलते रोजगार बाजार के बीच युवाओं को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो उन्हें सामाजिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने तथा अपने दायित्वों को समझने में सक्षम बनाए। डॉ. सिंह की सामाजिक सरोकार वाली साहित्यिक दृष्टि इस दिशा में वैचारिक आधार प्रदान करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा में बहुविषयक शिक्षा के साथ सामुदायिक सहभागिता, सेवा, पर्यावरण शिक्षा और मूल्य–आधारित शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने की बात करती है। इसमें सत्य, धर्म, शांति, प्रेम, अहिंसा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नागरिकता–मूल्य और जीवन–कौशल जैसे मानवीय एवं संवैधानिक मूल्यों को महत्त्व दिया गया है। इस नीति के संदर्भ में डॉ. सिंह के साहित्यिक चिंतन को पढ़ने पर साहित्य सामाजिक चेतना और नागरिक दायित्व के बीच एक प्रभावी सेतु के रूप में सामने आता है।

अतः डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों का विश्लेषण यह संकेत देता है कि ''साहित्य, शिक्षा और सामाजिक चेतना को अलग–अलग क्षेत्रों के रूप में नहीं, बल्कि युवा व्यक्तित्व निर्माण की

परस्पर संबद्ध प्रक्रियाओं के रूप में देखा जाना चाहिए।'' उनकी जनपक्षधर साहित्यिक दृष्टि युवाओं में सामाजिक वास्तविकताओं के प्रति संवेदनशीलता, आलोचनात्मक विवेक और उत्तरदायित्व विकसित करने की क्षमता रखती है। भारत की विशाल शिक्षा व्यवस्था और 24.80 करोड़ विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि में ऐसे विचारों का महत्व और बढ़ जाता है, क्योंकि शिक्षा की सफलता केवल शिक्षित व्यक्तियों की संख्या से नहीं, बल्कि इस बात से भी निर्धारित होती है कि शिक्षा कितने संवेदनशील, विवेकशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार करती है।

बदलते भारतीय सामाजिक परिवेश में साहित्यिक विचारों की प्रासंगिकता

समकालीन भारत तीव्र सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। डिजिटल संचार, वैश्वीकरण, शहरीकरण और नई रोजगार संरचनाओं ने युवाओं के जीवन, सोच और सामाजिक संबंधों को प्रभावित किया है। ऐसे परिवेश में डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक विचारों की प्रासंगिकता इस तथ्य में दिखाई देती है कि उनका चिंतन साहित्य को समाज के वास्तविक अनुभवों और जनजीवन से जोड़ता है। साहित्य के माध्यम से सामाजिक असमानता, श्रम, वंचना, मानवीय संवेदना और सामुदायिक जीवन को समझने की क्षमता विकसित होती है। इसलिए उनके विचार आज के युवाओं को केवल साहित्यिक ज्ञान प्रदान करने के बजाय सामाजिक वास्तविकताओं को समझने की दृष्टि भी प्रदान कर सकते हैं।

भारत में 2023–24 के दौरान 14,71,891 विद्यालय, 24.80 करोड़ विद्यार्थी और 98.08 लाख शिक्षक शिक्षा व्यवस्था का हिस्सा थे। इतनी विशाल व्यवस्था में साहित्य एवं मानवीय विषयों की भूमिका केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा विद्यार्थियों को अपने सामाजिक परिवेश से जोड़ते हुए उनमें संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित करे। इस दृष्टि से डॉ. सिंह की सामाजिक सरोकारों से संबद्ध साहित्यिक दृष्टि आज भी उपयोगी है। उनके विचारों का समकालीन पुनर्पाठ युवाओं को सामाजिक विविधता, असमानता और मानवीय संबंधों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने में सहायक हो सकता है।

युवा पीढ़ी, नैतिक चेतना और जिम्मेदार नागरिकता

आज भारतीय युवा एक ओर तकनीकी अवसरों, डिजिटल शिक्षा और वैश्विक रोजगार की संभावनाओं से जुड़ रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सूचना की अधिकता, सोशल मीडिया के प्रभाव, प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद और सामाजिक तनाव जैसी चुनौतियों का सामना भी कर रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार योग्य कौशल प्रदान करना नहीं, बल्कि युवाओं में नैतिक विवेक और जिम्मेदार नागरिकता विकसित करना भी होना चाहिए। डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचार इस संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं, क्योंकि उनके साहित्यिक चिंतन में सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदना और जनसरोकार प्रमुख दिखाई देते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षा को चरित्र निर्माण, नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन और जिम्मेदार नागरिकता से जोड़ती है। नीति में विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, करुणा, सहयोग, समानता, न्याय, लोकतांत्रिक भावना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को विकसित करने पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में डॉ. सिंह के विचारों को वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से जोड़ना केवल साहित्यिक अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक आवश्यकता भी बन जाता है।

विशेष रूप से युवा दायित्व के संदर्भ में उनके विचार यह संकेत देते हैं कि व्यक्ति का विकास समाज से अलग होकर नहीं हो सकता। शिक्षित युवा से अपेक्षा केवल यह नहीं होनी चाहिए कि वह स्वयं रोजगार प्राप्त करे, बल्कि यह भी होनी चाहिए कि वह अपने समुदाय, पर्यावरण और राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझे। इस प्रकार साहित्य और शिक्षा मिलकर आत्मकेंद्रित विकास के स्थान पर सामाजिक रूप से उत्तरदायी व्यक्तित्व निर्माण का आधार बन सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में समकालीन शैक्षिक उपयोगिता

डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों की सबसे महत्त्वपूर्ण समकालीन प्रासंगिकता राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक उद्देश्यों के संदर्भ में दिखाई देती है। छम्ब् 2020 शिक्षा को भारतीय भाषाओं, संस्कृति, मूल्यों, कौशल, बहुविषयक ज्ञान और समग्र व्यक्तित्व विकास से जोड़ती है। उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50 प्रतिशत करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसका अर्थ केवल अधिक युवाओं को उच्च शिक्षा तक पहुँचाना नहीं है, बल्कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करना भी है जो उन्हें सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए तैयार करे।

डॉ. सिंह के साहित्यिक विचारों का पुनर्पाठ इस लक्ष्य को मूल्यपरक आधार दे सकता है। यदि साहित्यिक अध्ययन को सामाजिक समस्याओं, भारतीय संस्कृति, मानवीय संवेदना और नागरिक दायित्व से जोड़ा जाए, तो विद्यार्थी में आलोचनात्मक दृष्टि के साथ सामाजिक प्रतिबद्धता भी विकसित हो सकती है। इसी प्रकार बहुविषयक शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनके विचार हिंदी साहित्य को समाजशास्त्र, शिक्षा, इतिहास, संस्कृति और नागरिक अध्ययन से जोड़ने की संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं।

समकालीन भारत में उनकी विचारधारा की उपयोगिता का मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि युवा दायित्व केवल राष्ट्रवादी भावनाओं तक सीमित नहीं होना चाहिए। लोकतांत्रिक भारत में राष्ट्रीय चेतना का अर्थ संवैधानिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, समानता, सह–अस्तित्व और विविधता के सम्मान के साथ राष्ट्र के विकास में भागीदारी है। इसलिए डॉ. सिंह के विचारों का आधुनिक पुनर्पाठ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

अतः डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचार आज भी ''नैतिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता, आलोचनात्मक चिंतन, जिम्मेदार नागरिकता और राष्ट्रीय प्रतिबद्धता'' के विकास के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समग्र एवं मूल्यपरक शिक्षा–दृष्टिकोण के साथ उनका वैचारिक सामंजस्य युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण को अधिक सामाजिक, मानवीय और उत्तरदायी बनाने की संभावनाएँ प्रस्तुत करता है। इस प्रकार उनके विचारों का समकालीन पुनर्पाठ केवल साहित्यिक महत्त्व का विषय नहीं, बल्कि भारत की बदलती शिक्षा और युवा–नीति के संदर्भ में भी उपयोगी है।

नैतिक चेतना और युवा व्यक्तित्व–निर्माण

भारत की वर्तमान युवा पीढ़ी तीव्र तकनीकी परिवर्तन, वैश्वीकरण, डिजिटल संचार और बदलती सामाजिक परिस्थितियों के बीच अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर रही है। ऐसी स्थिति में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान और रोजगार–कौशल तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं है। युवाओं में सही और गलत के बीच विवेक, अनुशासन, ईमानदारी, सहिष्णुता, करुणा और मानवीय संवेदना जैसे गुणों का विकास भी आवश्यक है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचार इस संदर्भ में महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि उनके चिंतन में साहित्य और शिक्षा को सामाजिक तथा नैतिक चेतना से जोड़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

नैतिक चेतना का अर्थ केवल व्यक्तिगत आचरण के नियमों का पालन करना नहीं, बल्कि अपने व्यवहार के सामाजिक प्रभाव को समझना भी है। डॉ. सिंह के विचारों का विश्लेषण यह संकेत देता है कि शिक्षा व्यक्ति को अपने अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक बनाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी व्यापक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए शिक्षा में नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों, सहानुभूति, सहयोग, समानता, न्याय, जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक भावना को महत्त्व देती है। अतः डॉ. सिंह के विचारों को शैक्षिक संदर्भ में अपनाने से युवा शिक्षा को केवल परीक्षा की तैयारी न मानकर जीवन–मूल्यों के विकास का माध्यम समझ सकते हैं।

भारत में 2023–24 में 14,71,891 विद्यालयों में लगभग 24.80 करोड़ विद्यार्थी और 98.08 लाख शिक्षक थे। इतने बड़े विद्यार्थी समुदाय के संदर्भ में नैतिक शिक्षा का प्रभाव व्यापक सामाजिक परिणाम उत्पन्न कर

सकता है। यदि शिक्षा युवाओं में विवेकपूर्ण निर्णय और मानवीय संवेदनशीलता विकसित करती है, तो इसका प्रभाव परिवार, समुदाय और व्यापक सामाजिक जीवन पर भी पड़ सकता है।

सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागिता

डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों की दूसरी महत्त्वपूर्ण उपयोगिता सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में देखी जा सकती है। भारत सामाजिक, भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधताओं वाला देश है। ऐसी विविधता में सामाजिक समरसता केवल कानूनों से सुनिश्चित नहीं की जा सकती इसके लिए नागरिकों में पारस्परिक सम्मान, सहयोग और सह–अस्तित्व की भावना आवश्यक है। युवा इस प्रक्रिया में विशेष भूमिका निभा सकते हैं, क्योंकि वे सामाजिक परिवर्तन के सक्रिय वाहक होते हैं।

डॉ. सिंह के साहित्यिक चिंतन में सामाजिक सरोकारों और जनजीवन के प्रश्नों की उपस्थिति युवाओं को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत करती है। साहित्य के माध्यम से गरीबी, असमानता, श्रम, सामाजिक वंचना और मानवीय संघर्ष को समझना युवा को केवल दर्शक न रहकर सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहभागी बनने की प्रेरणा दे सकता है। इस प्रकार साहित्यिक शिक्षा सामाजिक उत्तरदायित्व को व्यवहारिक चेतना में बदलने का माध्यम बन सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी अनुभवात्मक अधिगम, सामुदायिक सहभागिता, सेवा–भाव, पर्यावरणीय जागरूकता और सामाजिक संवेदनशीलता को महत्त्व दिया गया है। इन उद्देश्यों को डॉ. सिंह के विचारों के साथ जोड़ने पर शिक्षा संस्थानों में सामुदायिक कार्य, सामाजिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण, साक्षरता अभियान और स्थानीय समस्याओं के अध्ययन जैसी गतिविधियों को अधिक सार्थक बनाया जा सकता है। इससे युवा यह समझ सकते हैं कि शिक्षा का वास्तविक मूल्य समाज के प्रति उसके उपयोग में भी निहित है।

इस दृष्टि से सामाजिक उत्तरदायित्व को केवल पाठ्यक्रम का एक विषय बनाने के बजाय व्यवहारिक शिक्षा का हिस्सा बनाना अधिक प्रभावी होगा। उदाहरण के लिए विद्यार्थी स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण, स्वच्छता, शिक्षा, लैंगिक समानता या पर्यावरण संरक्षण से संबंधित गतिविधियों में भाग लेकर सामाजिक समस्याओं की वास्तविक प्रकृति समझ सकते हैं। इस प्रकार डॉ. सिंह के विचार और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुभवात्मक शिक्षा मिलकर युवा दायित्व को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान कर सकते हैं।

राष्ट्रीय भावना और जिम्मेदार नागरिकता का विकास

राष्ट्रीय भावना का अर्थ केवल राष्ट्र के प्रति भावनात्मक लगाव नहीं, बल्कि देश के संविधान, लोकतांत्रिक संस्थाओं, सामाजिक विविधता और सामूहिक हित के प्रति जिम्मेदार व्यवहार भी है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों में राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक समरसता और जिम्मेदार नागरिकता जैसे तत्वों को महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है। वर्तमान भारत में इन मूल्यों की आवश्यकता इसलिए अधिक है क्योंकि डिजिटल माध्यमों ने युवाओं को वैश्विक विचारों से जोड़ने के साथ–साथ सूचना के दुरुपयोग, भ्रामक सूचनाओं और सामाजिक ध्रुवीकरण जैसी चुनौतियों से भी परिचित कराया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय भाषाओं, संस्कृति और ज्ञान–परंपरा को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने पर बल देती है। इसका उद्देश्य अतीत का यांत्रिक अनुकरण करना नहीं, बल्कि भारतीय संदर्भों से जुड़े ज्ञान और मूल्यों को आधुनिक वैज्ञानिक तथा लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के साथ विकसित करना है। इसी संदर्भ में डॉ. सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचार युवाओं में अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति समझ विकसित करने के साथ सामाजिक विविधता के सम्मान को भी बढ़ावा दे सकते हैं।

उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को 2035 तक 50 प्रतिशत तक पहुँचाने का लक्ष्य केवल शिक्षा के विस्तार का प्रश्न नहीं हैय यह भारत के लिए बड़ी संख्या में शिक्षित युवाओं को सामाजिक और राष्ट्रीय विकास से जोड़ने का अवसर भी है। यदि उच्च शिक्षा में ज्ञान और कौशल के साथ नागरिकता–बोध, नैतिकता

और सामाजिक उत्तरदायित्व को समान महत्त्व दिया जाए, तो शिक्षित युवा राष्ट्र निर्माण में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

अतः डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों की भूमिका को ''नैतिक चेतना → सामाजिक उत्तरदायित्व → राष्ट्रीय भावना → जिम्मेदार नागरिकता'' की क्रमिक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। उनके विचार युवाओं को आत्मविकास से आगे बढ़कर समाज और राष्ट्र के व्यापक हित के बारे में सोचने की प्रेरणा दे सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल्यपरक, समावेशी और समग्र शिक्षा–दृष्टिकोण के साथ इन विचारों का समन्वय भारतीय युवाओं में संवेदनशील, विवेकशील, कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार नागरिकता विकसित करने का प्रभावी आधार बन सकता है।

परिणाम एवं चर्चा

अध्ययन के विश्लेषण से यह परिणाम प्राप्त हुआ कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में ''युवा दायित्व को ज्ञान, कौशल, नैतिकता, सामाजिक सहभागिता और राष्ट्रीय चेतना के समन्वित विकास'' के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। अध्ययन में प्रयुक्त द्वितीयक स्रोतों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधिकारिक दस्तावेजों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा एवं रोजगार तक सीमित न होकर चरित्र–निर्माण, आलोचनात्मक चिंतन, सामाजिक उत्तरदायित्व और जिम्मेदार नागरिकता का विकास करना है। 2023–24 में भारत में 14,71,891 विद्यालय, लगभग 24.80 करोड़ विद्यार्थी तथा 98.08 लाख शिक्षक होने के तथ्य शिक्षा के व्यापक सामाजिक प्रभाव को स्पष्ट करते हैं।

अध्ययन से यह भी सामने आया कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचारों में साहित्य को सामाजिक यथार्थ, जनजीवन, मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। उनके विचारों में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन न मानकर व्यक्तित्व–निर्माण, नैतिक चेतना, सामाजिक जागरूकता और जिम्मेदार नागरिकता के विकास का माध्यम माना गया है।

''चर्चा के स्तर पर'', डॉ. सिंह के विचारों और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच स्पष्ट वैचारिक साम्य दिखाई देता है। दोनों ही शिक्षा को व्यक्ति और समाज के बीच सार्थक संबंध स्थापित करने वाला माध्यम मानते हैं। विशेष रूप से नैतिक चेतना, सामाजिक सहभागिता, भारतीय संस्कृति, आलोचनात्मक चिंतन और राष्ट्रीय भावना जैसे आयाम वर्तमान युवा पीढ़ी के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के विचारों का समकालीन पुनर्पाठ युवाओं में ''नैतिक चेतना → सामाजिक उत्तरदायित्व → राष्ट्रीय भावना → जिम्मेदार नागरिकता'' के विकास में सहायक हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मूल्यपरक एवं समग्र शिक्षा–दृष्टिकोण के साथ इन विचारों का समन्वय भारतीय शिक्षा को अधिक सामाजिक, मानवीय और उत्तरदायी बनाने की दिशा में उपयोगी आधार प्रदान करता है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में युवा दायित्व को केवल व्यक्तिगत सफलता और रोजगार तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे ज्ञान, कौशल, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय चेतना के समन्वित विकास के रूप में समझना आवश्यक है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह के साहित्यिक एवं शैक्षिक विचार साहित्य, शिक्षा और सामाजिक चेतना को परस्पर संबद्ध करते हैं तथा युवाओं में मानवीय संवेदना, आलोचनात्मक चिंतन, नैतिक चेतना और जिम्मेदार नागरिकता के विकास पर बल देते हैं। अध्ययन स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल्यपरक, समावेशी एवं समग्र शिक्षा–दृष्टि और डॉ. सिंह के विचारों में महत्त्वपूर्ण वैचारिक समानता है। वर्तमान डिजिटल, वैश्विक एवं परिवर्तनशील सामाजिक परिवेश में इन विचारों का पुनर्पाठ युवाओं

को सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील, कर्तव्यनिष्ठ और विवेकशील बनाने में उपयोगी हो सकता है। अतः नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय भावना और जिम्मेदार नागरिकता की क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से डॉ. सिंह के विचार भारतीय युवा पीढ़ी के समग्र व्यक्तित्व–विकास तथा राष्ट्र–निर्माण के लिए महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भाषा का समाजशस्त्र डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. पटना–800006
2. भाषा साहित्य और इतिहास का पुनर्पाठ–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली–110063
3. हिंदी साहित्य प्रसंगवश डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, जागृति साहित्य प्रकाशन, पटना–800006
4. साहित्य में लोकतंत्र की आवाज, सम्पादक राजेन्द्र प्रसाद सिंह, संजय नवले, साहित्य संसद, नई दिल्ली–110045
5. हिंदी साहित्य का सबाल्टर्न इतिहास–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, गौतम बुक सेंटर, शाहदरा, दिल्ली–110093
6. हिंदी की लंबी कविताओं का आलोचना पक्ष राजेन्द्र प्रसाद सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–110002
7. समाज भाषाशास्त्री, राजेन्द्र प्रसाद सिंह–संपादक–शशिकला जय भारती प्रकाशन 267–बी, मुलीगंज, इलाहाबाद–211003
8. हिंदी का अस्मितामूलक साहित्य और अस्मिताकार– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, अमन प्रकाशन, कानपुर–12 (उ.प्र.)
9. इतिहास का मुआयना–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली–110063
10. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्लीरू भारत सरकार, 2020, पृ. 3
11. एस. के. कपूर. द स्टेट ऑफ एजुकेशन इन इंडिया इन द लाइट ऑफ स्वामी विवेकानंदस आइडिआज. इन विवेकानंद एज द टर्निंग पॉइंट, कोलकातारूअद्वैत आश्रम, 2013, पृ. 184–196.
12. ए. भट्टाचार्य एवं एस. के. दिआबाग. रेविसिटिंग स्वामी विवेकानंदस एजुकेशनल विजन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ इंडिआज एनईपी 2020. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 7(3), 2025, 1–6.

❑❑❑